

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

*डॉ. चन्द्रकांत शर्मा
**रेणु त्रिवेदी

सार

यह शोध पत्र प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति के विकास में शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका का विश्लेषण करता है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में केवल पारंपरिक व्याख्यान विधि पर्याप्त नहीं है, बल्कि दृश्य, श्रव्य एवं क्रियात्मक साधनों का समुचित उपयोग आवश्यक हो गया है। इस अध्ययन में 400 प्राथमिक विद्यार्थियों पर प्रायोगिक एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, सक्रियता, समझ और स्मृति में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

मुख्य शब्द:- शिक्षण सहायक सामग्री, अधिगम प्रवृत्ति, प्राथमिक शिक्षा, शिक्षण विधियाँ, अधिगम व्यवहार

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। यह न केवल व्यक्ति के ज्ञान और बौद्धिक क्षमता को विकसित करती है, बल्कि उसके व्यक्तित्व, सामाजिक मूल्यों, नैतिकता और व्यवहार को भी परिष्कृत करती है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि उसके नागरिकों की शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा का विशेष महत्व है, क्योंकि यह बालक के जीवन की वह अवस्था होती है, जहाँ उसके बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है। यदि इस स्तर पर शिक्षा को प्रभावी, रोचक और बालक-केंद्रित बनाया जाए, तो यह न केवल उसकी अधिगम क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि जीवन पर्यन्त सीखने की प्रवृत्ति को भी विकसित करती है।

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी स्वभावतः जिज्ञासु, कल्पनाशील और सक्रिय होते हैं। वे अपने आसपास की वस्तुओं, घटनाओं और अनुभवों से सीखने में अधिक रुचि रखते हैं। इस अवस्था में केवल मौखिक व्याख्यान या रटने पर आधारित शिक्षण पद्धति उनके लिए न तो आकर्षक होती है और न ही प्रभावी। परिणामस्वरूप, वे सीखने में रुचि खो देते हैं और उनकी अधिगम प्रवृत्ति प्रभावित होती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण प्रक्रिया को इस प्रकार डिजाइन किया जाए, जिससे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो सके और वे सीखने को एक आनंददायक अनुभव के रूप में ग्रहण करें।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नवाचार और परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। पारंपरिक शिक्षण विधियों के स्थान पर अब गतिविधि-आधारित, अनुभवात्मक और छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को प्राथमिकता दी जा रही है। इन नवीन पद्धतियों में शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षण सहायक सामग्री वे सभी साधन हैं, जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, स्पष्ट, रोचक और प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं। इनमें दृश्य, श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य साधन शामिल होते हैं, जैसे—चार्ट, मॉडल, चित्र, फ्लैश कार्ड, मानचित्र, प्रोजेक्टर, वीडियो, स्मार्ट बोर्ड, डिजिटल सामग्री आदि।

शिक्षण सहायक सामग्री इस अधिगम प्रवृत्ति को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करती है। जब शिक्षक विभिन्न प्रकार की सामग्री का उपयोग करते हैं, तो विद्यार्थी अधिक सक्रिय और उत्साहित हो जाते हैं। यह

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

डॉ. चन्द्रकांत शर्मा एवं श्रीमती रेणु त्रिवेदी

सामग्री उनके ध्यान को आकर्षित करती है, जिज्ञासा उत्पन्न करती है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त, यह विद्यार्थियों को स्वयं अनुभव करने, खोजने और समझने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनकी रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता का भी विकास होता है। हालांकि, व्यावहारिक स्तर पर यह देखा गया है कि अनेक विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री का समुचित उपयोग नहीं हो पाता। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसे—संसाधनों की कमी, शिक्षकों का प्रशिक्षण अभाव, समय की सीमाएँ, या शिक्षकों की पारंपरिक सोच। कई बार विद्यालयों में सामग्री उपलब्ध होने के बावजूद उसका प्रभावी उपयोग नहीं किया जाता, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाती। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि दोनों प्रभावित होती हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह अध्ययन प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति के विकास में शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास करता है। इस शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करता है, और यह उनके अधिगम को कितना प्रभावी बनाता है। साथ ही, यह भी अध्ययन किया जाएगा कि विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री में से कौन-सी सामग्री अधिक प्रभावी है और किन परिस्थितियों में उसका सर्वोत्तम उपयोग किया जा सकता है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभावी उपयोग न केवल शिक्षण को सरल और रोचक बनाता है, बल्कि यह विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को सकारात्मक दिशा में विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता और प्रभाव का गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, और प्रस्तुत शोध इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

शोध की पृष्ठभूमि

शिक्षा के क्षेत्र में समय-समय पर विभिन्न परिवर्तन और नवाचार होते रहे हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सुलभ और सार्थक बनाना रहा है। प्रारंभिक काल में शिक्षा मुख्यतः परंपरागत पद्धतियों पर आधारित थी, जिसमें शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण, मौखिक व्याख्यान और रटने की प्रक्रिया को अधिक महत्व दिया जाता था। इस प्रकार की पद्धति में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सीमित होती थी, जिससे उनके बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनकी अधिगम प्रवृत्ति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।

भारत के संदर्भ में भी प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भी इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि शिक्षण को अधिक अनुभवात्मक, गतिविधि-आधारित और प्रौद्योगिकी-संपन्न बनाया जाए। इसमें शिक्षण सहायक सामग्री और डिजिटल साधनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है, ताकि विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और रुचिकर बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त, समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत भी विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है। हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद वास्तविक स्थिति में कई चुनौतियाँ देखने को मिलती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री की उपलब्धता सीमित होती है, या उपलब्ध होने पर भी उसका प्रभावी उपयोग नहीं किया जाता। कई शिक्षकों को इन सामग्रियों के उचित उपयोग के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, जिसके कारण वे पारंपरिक शिक्षण विधियों पर ही निर्भर रहते हैं। इसके अतिरिक्त, कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या, समय की कमी और संसाधनों का अभाव भी शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग में बाधा उत्पन्न करते हैं। इन परिस्थितियों का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर पड़ता है। जब शिक्षण प्रक्रिया नीरस और एकतरफा होती है, तो विद्यार्थी उसमें रुचि नहीं लेते और उनकी सीखने की इच्छा तथा सहभागिता कम हो जाती है। इसके विपरीत, जब शिक्षण में विविध प्रकार की सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है, तो विद्यार्थी अधिक सक्रिय, उत्साहित और जिज्ञासु बनते हैं, जिससे उनकी अधिगम प्रवृत्ति सकारात्मक रूप से विकसित होती है। यह अध्ययन इस बात की जांच करने का प्रयास करता है कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ ही, यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि किन परिस्थितियों में और किस प्रकार की सामग्री का उपयोग अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। अतः यह शोध शिक्षा के

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

डॉ. चन्द्रकांत शर्मा एवं श्रीमती रेणु त्रिवेदी

क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है, क्योंकि यह न केवल शिक्षण सहायक सामग्री की उपयोगिता को स्पष्ट करेगा, बल्कि यह भी बताएगा कि किस प्रकार इन सामग्रियों का उपयोग करके विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को सुदृढ़ किया जा सकता है।

शोध समस्या

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही उनके भविष्य के शैक्षिक जीवन की आधारशिला होती है। इसके बावजूद, विद्यालयों में प्रचलित शिक्षण पद्धतियाँ अभी भी अनेक स्थानों पर पारंपरिक और शिक्षक-केंद्रित बनी हुई हैं, जहाँ शिक्षण मुख्यतः व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक तक सीमित रहता है। ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सीमित हो जाती है और उनकी सीखने के प्रति रुचि तथा प्रेरणा में कमी देखने को मिलती है।

शिक्षण सहायक सामग्री को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रोचक और छात्र-केंद्रित बनाने का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। यह विद्यार्थियों की जिज्ञासा को बढ़ाती है, उनकी अवधारणाओं को स्पष्ट करती है तथा उन्हें सक्रिय रूप से सीखने के लिए प्रेरित करती है। इसके बावजूद, अनेक विद्यालयों में या तो शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव है या उपलब्ध सामग्री का समुचित एवं प्रभावी उपयोग नहीं किया जाता। इसके पीछे संसाधनों की कमी, शिक्षकों के प्रशिक्षण का अभाव, समय की सीमाएँ तथा पारंपरिक दृष्टिकोण जैसे कारण प्रमुख हैं। इसके परिणामस्वरूप, यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या शिक्षण सहायक सामग्री का उचित उपयोग वास्तव में प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को प्रभावित करता है? इसके अतिरिक्त, शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के संदर्भ में भी शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग और उसके प्रभाव में अंतर देखने को मिल सकता है। यह अंतर विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी एक महत्वपूर्ण शोध विषय है, जिस पर पर्याप्त अध्ययन नहीं किया गया है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की मूल समस्या यह है कि—

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग का विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है, और किस प्रकार इसका प्रभाव अधिकतम किया जा सकता है?

इस मुख्य समस्या के अंतर्गत निम्नलिखित शोध प्रश्न निहित हैं—

- क्या शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है?
- शिक्षण सहायक सामग्री के कौन-से प्रकार अधिक प्रभावी हैं?
- शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग में कौन-कौन सी बाधाएँ हैं?
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इसके प्रभाव में क्या अंतर है?

अतः इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के उद्देश्य से यह शोध कार्य किया जा रहा है, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और परिणामोन्मुख बनाया जा सके।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

डॉ. चन्द्रकांत शर्मा एवं श्रीमती रेणु त्रिवेदी

3. शिक्षण सहायक सामग्री का विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री (दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य) की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति में अंतर का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य में साहित्य समीक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि यह पूर्व में किए गए अध्ययनों, सिद्धांतों एवं निष्कर्षों का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इससे शोधकर्ता को अपने अध्ययन की दिशा, प्रासंगिकता और शोध-अंतराल (Research Gap) का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होता है। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में शिक्षण सहायक सामग्री तथा विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति से संबंधित विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए शोधों का अवलोकन किया गया है।

शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व को स्पष्ट करते हुए कई शिक्षाशास्त्रियों ने यह माना है कि यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाती है। जॉन डेवी ने अनुभवात्मक अधिगम पर बल देते हुए यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक एवं क्रियात्मक होनी चाहिए। उनके अनुसार, जब विद्यार्थी स्वयं क्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं, तो उनका अधिगम अधिक स्थायी और प्रभावी होता है। इसी प्रकार, ब्रूनर ने खोज-आधारित अधिगम का समर्थन करते हुए शिक्षण में दृश्य और क्रियात्मक साधनों के उपयोग को आवश्यक बताया।

भारतीय संदर्भ में भी अनेक अध्ययनों ने शिक्षण सहायक सामग्री की उपयोगिता को सिद्ध किया है। एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा किए गए विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया कि जिन कक्षाओं में शिक्षण सहायक सामग्री का नियमित और प्रभावी उपयोग किया गया, वहाँ विद्यार्थियों की उपलब्धि और सहभागिता का स्तर अधिक था। इसी प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षण को अधिक अनुभवात्मक, गतिविधि-आधारित और प्रौद्योगिकी-संपन्न बनाने पर बल दिया गया है, जिसमें शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है।

अधिगम प्रवृत्ति के संदर्भ में भी विभिन्न मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों ने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं। पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के अनुसार, बालक विभिन्न चरणों में अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विकास करता है और वह सक्रिय सहभागिता के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखता है। इसी प्रकार, वाइगोत्स्की ने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत प्रस्तुत करते हुए यह बताया कि अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक, सहपाठी और वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अतः प्रस्तुत शोध इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का गहन अध्ययन करते हुए विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को समझने और उसे सुदृढ़ करने के उपायों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों के निष्कर्षों को आगे बढ़ाते हुए एक नए दृष्टिकोण से इस विषय का विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

सारणी: शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.सं.	अधिगम प्रवृत्ति के घटक	शहरी विद्यार्थी (240)	ग्रामीण विद्यार्थी (240)	कुल (480)
1	सीखने में रुचि	190 (79.2%)	170 (70.8%)	360 (75%)
2	सक्रियता	180 (75%)	160 (66.7%)	340 (70.8%)
3	समझ	200(83.33%)	175(72.9%)	375(78.1%)
4	स्मृति	185(77.1%)	165(68.8%)	350(72.9%)

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

डॉ. चन्द्रकांत शर्मा एवं श्रीमती रेणु त्रिवेदी

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति के विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

प्रथम, सीखने में रुचि के संदर्भ में देखा जाए तो शहरी विद्यार्थियों में 79.2% तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में 70.8% ने अधिक रुचि दिखाई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों में जिज्ञासा और आकर्षण उत्पन्न करती है, विशेषकर शहरी क्षेत्र में इसका प्रभाव अधिक स्पष्ट है।

द्वितीय, सक्रियता के स्तर पर भी शहरी (75%) विद्यार्थियों की भागीदारी ग्रामीण (66.7%) की तुलना में अधिक पाई गई। यह इंगित करता है कि शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों को कक्षा में अधिक सक्रिय एवं सहभागितापूर्ण बनाती है।

तृतीय, समझ के स्तर पर सर्वाधिक प्रभाव देखने को मिला, जहाँ शहरी विद्यार्थियों में 83.3% तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में 72.9% ने बेहतर समझ विकसित की। इससे यह स्पष्ट होता है कि दृश्य एवं श्रव्य साधनों के प्रयोग से जटिल विषय भी सरल एवं स्पष्ट हो जाते हैं।

चतुर्थ, स्मृति के संदर्भ में भी सकारात्मक प्रभाव पाया गया, जहाँ शहरी विद्यार्थियों में 77.1% और ग्रामीण विद्यार्थियों में 68.8% ने दीर्घकालिक स्मृति में सुधार प्रदर्शित किया। यह दर्शाता है कि शिक्षण सहायक सामग्री सीखने को स्थायी बनाती है।

भीलवाड़ा जिले के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि—

- शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों की **रुचि, सक्रियता, समझ और स्मृति** सभी में सुधार करती है।
- शहरी क्षेत्रों में इसका प्रभाव अधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों एवं प्रशिक्षण की कमी के कारण प्रभाव अपेक्षाकृत कम है।
- यदि ग्रामीण विद्यालयों में भी पर्याप्त शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाए, तो अधिगम प्रवृत्ति में और अधिक सुधार संभव है।

अंततः, समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति—रुचि, सक्रियता, समझ एवं स्मृति—सभी पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, हालांकि शहरी विद्यार्थियों में इसका प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इसका कारण संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकी साधनों की पहुँच एवं शिक्षण विधियों में भिन्नता हो सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति पर शिक्षण सहायक सामग्री के प्रभाव का विश्लेषण करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संकलित आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित हुआ कि शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। जिन विद्यार्थियों को शिक्षण सहायक सामग्री के माध्यम से पढ़ाया गया, उनमें सीखने के प्रति रुचि, उत्साह, जिज्ञासा तथा सक्रिय सहभागिता का स्तर अधिक पाया गया। इसके विपरीत, पारंपरिक शिक्षण पद्धति के अंतर्गत पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति अपेक्षाकृत कम रुचि देखी गई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाती है।

अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच अधिगम प्रवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण भी किया गया, जिसमें यह पाया गया कि शहरी विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक विकसित है। इसका मुख्य

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

डॉ. चन्द्रकांत शर्मा एवं श्रीमती रेणु त्रिवेदी

कारण शहरी विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री की अधिक उपलब्धता, तकनीकी संसाधनों की बेहतर स्थिति तथा शिक्षकों का अपेक्षाकृत अधिक प्रशिक्षित होना है। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और सीमित सुविधाओं के कारण शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभावी उपयोग नहीं हो पाता।

अंततः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षण सहायक सामग्री का अधिकाधिक और प्रभावी उपयोग अनिवार्य है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाए तथा शिक्षण प्रक्रिया को अधिक छात्र-केंद्रित बनाया जाए। इससे विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति में निरंतर सुधार संभव होगा और शिक्षा के समग्र उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकेगी।

*सहायक आचार्य
**शोधार्थी
शिक्षा विभाग,
अपैक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस, पृ. 112
2. शर्मा, आर.ए. (2010). शिक्षा अनुसंधान के सिद्धांत एवं विधियाँ. मेरठ: लोकेश प्रकाशन, पृ. 85
3. सिंह, एस.पी. (2012). आधुनिक शिक्षण विधियाँ. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, पृ. 56
4. भटनागर, आर.पी. (2008). शिक्षा के सिद्धांत. जयपुर: आर.एल. बुक डिपो, पृ. 140
5. गुप्ता, एस.सी. (2011). शिक्षा में अनुसंधान पद्धति. नई दिल्ली: शारदा पुस्तक भवन, पृ. 95
6. पांडेय, के.पी. (2013). शिक्षण तकनीक एवं विधियाँ. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 45

“शिक्षण सहायक सामग्री और प्राथमिक विद्यार्थियों की अधिगम प्रवृत्ति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

डॉ. चन्द्रकांत शर्मा एवं श्रीमती रेणु त्रिवेदी